आज मैं लौट आओ

(कविता-संग्रह)

आज मैं लौट आओ

रमेश चन्द्र विद्यार्थी

साहित्यवाणी
२८, पुराना अल्लापुर इलाहाबाद

पूज्यनीय पिताजी

को

सादर समर्पित

क्रम

□□□

कवि बनाम कविता

कवि !
मुझे गजल की पंक्तियाँ मत बनाओ
मैं अमीरों की रातें
गुलशन करना नहीं चाहती।

मुझे मुजरों का रूप न दो
मैं रहीसों-नवाबों की
अठखेलियाँ बनना नहीं चाहती।

मुझे छायावादी छंद मत बनाओ
मैं रहस्य बनकर
पाठक को ठगना नहीं चाहती।

मुझ पर प्रयोगवादी प्रयोग मत करो
मैं शब्दों के जाल में
अटकना नहीं चाहती।

मुझे कविता से अकविता मत बनाओ
मैं अपने अर्थ
खोना नहीं चाहती।

मुझे शायरी का आकार न दो
मैं हुस्नों-इश्क की
खिदमत नहीं चाहती।

कवि !
तुम मेरा रूप-श्रृंगार करके
मुझे व्यक्तिवादी हविश का
शिकार मत बनाओ
मैं बदनामी नहीं चाहती।

मेरे कवि !
हो सके तो
तुम मुझे

उस निर्धन, बेवस, शोषित
खेतिहर मजदूर की
वाणी बना दो

जिससे वह
शोषण-दमन
और अन्याय के खिलाफ
अपनी आवाज उठा सके

समाज के कान खड़े कर दे
अपने फटे जीवन को
उलटने के लिए !

●

घूमता हुआ चक्र

गरीब के लिए विकास
विकास के लिए सरकार
सरकार के लिए मंत्री

मंत्री के लिए बहुमत
बहुमत के लिए सांसद
सांसद के लिए कुर्सी

कुर्सी के लिए चुनाव
चुनाव के लिए चन्दा
चन्दे के लिए पैसा

पैसे के लिए पूंजीपति
पूंजीपति के लिए शोषण
शोषण के लिए गरीब

गरीब के लिए विकास
विकास के लिए......

●

इतिहास

था पढ़ा पिता ने
अपने काल में
भारत का इतिहास—

छोटी-छोटी रियासतें
थे अनेक राजे-महाराज
फूट डालकर और लड़ाकर
फिर हड़पकर, मालिक बन गये
इस भू-पर
हुआ विदेशी-राज

युग बीता
सदियाँ बीतीं
आयी फिर तेजी से आँधी
राजनीति के नील-गगन में
चमका एक सितारा गाँधी
आजाद और भगत सिंह

सुभाष-बोस की कुर्बानी!
आजादी के जंग में
रंग लाई मस्तानी

देश हुआ स्वतंत्र
स्वप्न साकार हो गया

नेहरू, राजेन्द्र, पटेल, सरदार
आजादी के कर्णधार
बने देश के शिल्पकार।
बेटा पढ़ता है आज
अपने काल में
भारत का इतिहास—

आजादी के बीत गये
पूरे छत्तीस साल
कांग्रेस गई, जनता आई
जनता गई फिर कांग्रेस आई

मिटा न कोई सवाल,
बेकारी, भुखमरी, गरीबी,
महँगाई बेहाल
शोषण, पीड़न, अन्याय, अनीति
भ्रष्टाचार का जाल

झारखंड, छत्तीसगढ़
और विदर्भ की माँग
द्रविड़ देश, फिर काश्मीर
फिर खालिस्तान भी
आग लग गई है घर में
बनते-बनते ही।

पौत्र पढ़ेगा—
कल भविष्य में
भारत का इतिहास—

सब राज्य पृथक् हो गये
टुकड़े-टुकड़े भाग
हिन्दू-देश, बंगाल-भूमि
नागालैण्ड और खालिस्तान
मराठवाड़ा, गुजरात राष्ट्र
द्रविड़नाड़ और राजस्थान
कश्मीरी कश्मीर ले भगे
आसामी आसाम को
देश पहुँच गया १८वीं सदी में
फिर से नाश-विनाश को।

कोई विदेशी
फिर आया
हड़प कर चूहों को
गिद्धों का शासन स्थापित
बस थोड़े अन्तराल में
दासी बन गई फिर भारत माँ
नालायक पुत्रों के जाल में।

मैं सोचता हूँ
क्या ? मेरी पीढ़ी
भविष्य में लिखे जाने वाले

पौत्र के इतिहास को
नहीं बदल सकती ?
क्या
नहीं बदल सकती...... ?
यह भी
पूरा झूठ है—
कि वह कांग्रेसी है
वह जनता वाला है
वह चरखा वाला है
वह पंजा वाला है।

सच
सिर्फ यह है—
कि वह बंगले वाला है
वह झोपड़ी वाला है

वह मोटर वाला है
वह सायकल वाला है
वह पीटने वाला है
वह पिटने वाला है

वह मिटाने वाला है
वह मिटने वाला है
वह ठगने वाला है
वह ठगाने वाला है

वह शोषक है
वह शोषित है।
यही सच है।

जनता क्या जाने

नेता की रोटी
जनता की रोटी से
ज्यादा मोटी
ज्यादा चुपड़ी
ज्यादा पौष्टक
होती है
होनी भी चाहिए।

जनता क्या जाने
गली-गली वोट माँगने
भाषण देने
दंगे करवाने
सहानुभूति बाँटने
एक दूसरे की टाँग खींचने
और
संसद/विधान सभा में
जूतों-चप्पलों से लड़ने में
कितना श्रम
लगता है।

●

जरूरी है

अत्याचार बढ़ने दो
आग भड़कने दो
तेज तपती आग में ही
लोहा पिघलता है।

नये आकार
के लिए
जरूरी है,

पहले,
पुराने आकार का
पिघलना।

●

अब वह दिन दूर नहीं

आज तुम दौड़ रहे हो
बड़ी शान से
अपनी चमकीली, आलीशान
आयातित मोटर-कार में
इठलाते हुए—...
सड़क की छाती पर।

सड़क
जिसकी गिट्टियों को तुमने
तोड़-तोड़ कर अलग कर दिया है,
काट दिया है
एक दूसरे से
भर दिया है उनके बीच
काला डामर,
दबा दिया है जिन्हें
मजबूत रोलरों से
अपने स्वार्थ की खातिर
और रौंद रहे हो उन्हें
रोज सुबह-शाम हर-पल
अपनी कारों के
वजनी पहियों द्वारा।

याद रखो
गिट्टियाँ अब जान रही है
कि वे चट्टान की सन्तानें हैं
उन्हें अधिक समय तक
अब बहकाया नही जा सकता।

वे अपने भीतर
तुम्हारे द्वारा भरे गये डामर को
उधेड़कर
अब छिटक उठेंगी
और बरस पड़ेंगी
सब एक-साथ मिलकर

चट्टान बनकर
तुम पर
तुम्हारी कारों पर
तुम्हारी
इस व्यवस्था पर।

अब वह दिन दूर नही
जब तुम्हारे अवशेष भी
तुम्हें ढूंढ़े नही मिलेंगे।

यही सच है

झूठ है—
कि वह हिन्दू है
वह मुस्लिम है,
वह ईसाई है।

झूठ है—
कि वह ब्राह्मण है
वह बनिया है
वह हरिजन है।

झूठ है—
कि वह मराठी है
वह पंजाबी है
वह बंगाली है।

झूठ है—
कि वह उत्तर का है
वह दक्षिण का है
वह पूरब का है

झूठ है यह भी—
कि वह डाक्टर है
वह मास्टर है
वह अफसर है

सबमें एक-असर है

नदी का पानी
अब लोगों की प्यास
नहीं बुझाता,
बाढ़ बनकर
उनके घर उजाड़ता है
लोगों की जान लेता है।

लकड़ी की आग
अब नहीं पकाती चूल्हे में
लोगों के लिए भोजन,
विकराल रूप धारण कर
उनके घर जलाती है
राख करती है लोगों का जीवन।

घर का प्रहरी कुत्ता
अब मालिक की सुरक्षा नहीं करता
चोरों-डकैतों के आने पर
अब वह नही भौंकता
वह उनसे मिल गया है
मिलकर घर लुटवाता है
अपना हिस्सा बटाता है

फूलों ने काँटों से
समझौता कर लिया है
अब वे
काँटों से भी ज्यादा चुभने लगे हैं।

भरपूर परिश्रम करने के बाद भी
खेत में उपजती है
लाखड़ी दाल
शरीर और दिमाग को
कुण्ठ बनाने के लिए
खेत की मिट्टी
ऊसर बना दी गई है
पैदा नहीं होती उसमें
कोई दूसरी फसल

बकरे-बकरियों के झुण्ड
डागबेल वेशरम के झाड़)
खाने के लिए
अभिशप्त जिन्दगी जीने के लिए
मजबूर हैं
क्योंकि
उनके सामने नहीं आने पाता
दूसरा बेहतर चारा

न्याय,
बन्दर के तराजू की रोटी बन गया है
जो जरूरतमंद को कभी नहीं मिलता,
उसे बन्दर खुद हड़प जाता है।

मैं मानता हूँ
नदी का पानी, लकड़ी की आग
प्रहरी कुत्ते
फूल, खेत, वकरी के चारे
और न्याय में
कोई आपसी सम्बन्धी नहीं है
लेकिन फिर भी
एक बात सब में कामन है
सबमें एक-सा असर है
जबरदस्त असर
बदले मौसम का
बदली आबहवा का
इस व्यवस्था का

तभी
डाली पर बैठी कोयल भी
अब सुरीली आवाज़ में
'पियू-पियू' नहीं गाती
'पैसा-पैसा' चिल्लाती है
सुबह से शाम तक
चीखती रहती है
कर्कश आवाज में।

•

गुलाब बनाम गेहूँ

मैं,
गुलाब बनना नहीं चाहता
माना कि
गुलाब सुन्दर होता है
गुलाब खुशबू देता है
गुलाब में रस होता है
गुलाब आकर्षित करता है।

गुलाब से इत्र बनता है
इत्र शान बढ़ाता है
अप्सराओं को लुभाता है
इत्र बरातियों का
मेहमानों का स्वागत करता है
रुतबा बढाता है।

लेकिन,
गुलाब का सिंहासन
काँटों के सिर पर है

पता नहीं.
एक गुलाब खिलाने के लिए
पहले कितनी कलियों को

कांटों का रूप दिया गया
दुख, अभाव और पीड़ा से सूखे
सुखकर कठोर बन गये
कांटे,

जो कभी खिल पाते
तो एक-एक फूल वनते
अब चुभने लगे हैं
तिरस्कृत, अप्रिय
तुच्छ हो गये हैं।

मैं
गेहूँ की वाली बनाना चाहता हूँ
मुझे रुतवे से क्या लेना देना
मेरा जीवन
लोगों के कुछ काम तो आयेगा
भूख में
क्षुधा मिटायेगा।

क्योंकि
शौक-शान से ज्यादा जरूरी है
पेट मे
दो जून की रोटी

संघर्ष

जब
सूर्य के ताप
और समुद्र के जल में
संघर्ष
छिड़ता है

तपन सूर्य की क्षय होती है
सागर का पानी भी सूखता है
दोनों के मुठभेड़ से
भाप बनती है।

भाप, बादलों को जन्म देती है
काले बादल उड़कर
धरती पर बरसते हैं

वर्षा होती है
ठंडक मिलती है
गर्मी की तपन से
झुलसाई भूमि पर

हरियाली छाती है
चिड़ियां चहचहाती हैं
फूल खिलते हैं

नदी-तालाब भरते हैं
झूले पड़ते हैं। बहार आती है

लोग कहते हैं
सावन आ गया।
मैं सोचता हूँ
यदि
सूर्य और समुद्र के बीच
संघर्ष न हो
कोई समझौता हो जाए

तो,
सावन का भविष्य
क्या होगा ?

छत्तीसगढ़ की भूमि !

कितने अंगारे जलते हैं । आये दिन
तुम्हारी गोद में
छत्तीसगढ की भूमि !
फिर भी
तुम कितनी ठण्डी हो अब भी

तुम अपनी आँखों से
कब तक देखती रहोगी
अघनू के खेत मे कटती

कच्ची फसल । श्रम का धून
मालगुजार के घर । कमिया लगा
दुबराता । सूखता फगुवा
तुम कब देखती रहोगी
इन पथराई आँखों से
मंगलिन की लुटती हुई इज्जत

पुसइया का कटा लुगरा
इतवारी का नंगा घूमता लड़का
और ढोरों के पीछे दौड़ती
टुकना सिर पर धरे
गोबर उठाती नोनी

करम का दोष
करनी का फल
तकदीर-भाग्य और भगवान में
कब तक उलझी रहोगी
छत्तीसगढ़ की भूमि
बोली ! तुम

तुम्हारे भोलेपन का
तुम्हारी सिधाई और सरलता का
वे लोग
मजाक उड़ाते है
तुम्हें निपट गंवार, मूर्ख और पिछड़ा
बताते है

उन्होंने तुम्हें
एक बहुत बढ़िया चारागाह बना लिया है
और चर रहे हैं तुम्हें
दिन रात
जानवर बनकर
जुगाली करते हुए। बड़े मजे से
छत्तीसगढ़ की भूमि !
इतना सब देखने पर भी
तू सब कुछ
कैसे सहती है !
चुप रहती है !!

शिकार का बीज

रोज सुबह
पड़ोसी का लड़का
जोर-जोर से पढ़ता है
पाठ रटता है

'झूठ मत बोलो
किसी का बुरा मत करो
हमेशा सच बोलो
इमानदार बनो

खूब पढ़ो
बड़े बनो
अच्छे काम करो
अच्छे बच्चे सबको भाते हैं।'

मैं सोचता हूँ
बच्चों के साथ
यह कैसा खिलवाड़ है

जिसे बड़ा होकर
एक दिन
इस व्यवस्था का अंग बनना है
उसे यह पाठ
किस काम आयेगा।

किन्तु हाँ,
इस व्यवस्था का शिकार
वह जरूर बन जायेगा।

तुम क्या चाहते हो
मैं जानता हूँ अच्छी तरह
मैं तुम्हारे तलवे चाटूं
या मिट जाऊँ पूरी तरह
नामो निशान भी बाकी न रहे
मेरा।

अभी तक
तुम यही तो करते आये हो
मेरे सभी जात-भाइयों के साथ
तुम्हारा खेल
आज भी चालू है
और हरबार
तुम्हारी जीत पक्की है

लेकिन,
अब तुम्हारे दांव
मोहरे समझने लगे हैं
मोहरे
अब खुद खेलेंगे
अपनी चाल खुद चलेंगे

क्योंकि,
मोहरे
अब मोहरे नहीं हैं।

तुम क्या चाहते हो
मैं जानता हूँ अच्छी तरह
मैं तुम्हारे तलवे चाटूं
या मिट जाऊँ पूरी तरह
नामो निशान भी बाकी न रहे
मेरा।

अभी तक
तुम यही तो करते आये हो
मेरे सभी जात-भाइयों के साथ
तुम्हारा खेल
आज भी चालू है
और हरबार
तुम्हारी जीत पक्की है

लेकिन,
अब तुम्हारे दाँव
मोहरे समझने लगे हैं
मोहरे
अब खुद खेलेंगे
अपनी चाल खुद चलेंगे

क्योंकि,
मोहरे
अब मोहरे नहीं हैं।

सूरज और चाँद

चाँद की तरह
चमकने से
क्या फायदा ?

चाँद उधार की रोशनी लाता है
सूरज का मुंह ताकता है
चाँद पराश्रयी है
उसमें खुद की चमक नहीं है
चमकता है वह
दूसरों के बल पर
अकड़ता है
इतराता है।

चाँद खूबसूरत है
पर ऐसी खूबसूरती
किस काम की।

× × ×

सूरज चमकता है
खुद जलता है। तपता है
किरणें पैदा करता है
अपने बल पर
दुनिया को उजला करता है
सूरज दूर होता है
महान होता है
तभी तो

सभी छोटे बड़े
उसके आगे नत
मस्तक रहते हैं।

मैं तस्वीर बनाना चाहता हूँ

मैं तस्वीर बनाना चाहता हूँ
एक साफ-सुथरे इंसान की
शोषण-रहित
षड़यंत्रों से मुक्त
जालों-फन्दों से उन्मुक्त
खुली हवा में
मुस्कराहट बिखेरते इसान की
मैं तस्वीर बनाना चाहता हूँ
एक साफ सुथरे इंसान की।

माथे पर
बलखाती लकीरें न हों
चेहरे पर
निराशा भरी पीरें न हों
हाथों को काम का दुकाल न हो
पेट में अन्न का अकाल न हो
एक निश्चित, भयमुक्त
मेहनती इंसान की
मैं तस्वीर बनाना चाहता हूँ
एक साफ-सुथरे इंसान की।

जिसमें
संस्कृति का छल न हो
आयातित भाषा का
बल न हो
उधार ली गई सभ्यता न हो
अपनी भाषा
अपनी संस्कृति-सभ्यता
अपने लोगों
अपनी माटी से जुड़े इंसान की
मैं तस्वीर बनाना चाहता हूँ
एक साफ सुथरे इंसान की।

मैं भरना चाहता हूँ उसमें
स्वतन्त्रता के वास्तविक रंग
गहराना चाहता हूँ उसके रूप को
निश्चित लकीरों
और पक्की स्याही में
कैनवास के पर्दे पर

ताकि,
फिर कोई शोषक
जन-द्रोही,
बदल न दे उसके स्वरूप को
विकृत न कर दे
एक व्यक्तित्ववान ईमानदार इंसान की
मैं तस्वीर बनाना चाहता हूँ
एक साफ-सुथरे इंसान की।

बेरोजगारी का विज्ञान

आकाश में
घने बादलों को देखकर
गाँव का अपढ़ घसिया
कहता है—
'आज भगवान के घर से
पानी बरसही'

जब वर्षा नहीं होती
सूखा पड़ता है
तब घसिया कहता है
'भगवान ए बरस
पानी नईं दिहिन
खेती-खार सुखागे
का करबो मालिक'

वर्षा के विज्ञान से अपरिचित
शिक्षा से अनभिज्ञ
घसिया का हर कार्य
भगवान के भरोसे होता है
किस्मत के भरोसे चलता है।

तुम बेरोजगार हो
तुमको रोजगार नहीं मिलता
पढ़ने और
डिग्री लेने के बाद भी
तुम सड़क नापते हो
चप्पलें घिसते हो
कुंठा में जीते हो।
बेरोजगारी क्यों है ?
वे बतलाते है
जनसंख्या बढ़ गई है
बढ़ती जा रही है दिनोंदिन
कैसे पैदा होंगे
ढेर सारे लोगों के लिए
ढेर सारे रोजगार। एक साथ
जादू की छड़ी तो नहीं है
हमारे पास
कि छूमन्तर, घुमा दिया
और सबको रोजगार मिल गया
लोग केवल सरकार भरोसे
मत रहें

खुद अपना काम ढूंढे।
इस दलील को
हम मान जाते है
वेबस हो जाते है
किस्मत को
कोसते हैं अपने।

बताओ तब
हममें और उस अपढ़ घसिया में
क्या फर्क है
वह अपढ है
इसलिए भाग्यवादी है
हम शिक्षित है
फिर भी भाग्यवादी हैं

क्या बेरोजगारी भी
भगवान के घर से पैदा होती है ?
घसिया के
वर्षा के पानी की तरह,
हम अनभिज्ञ है
बेरोजगारी के विज्ञान से
सैकड़ों श्रमिकों का
श्रम खाने वाली
मोटी-मोटी मशीनें
जिनके वे मालिक हैं
जो छोटे स्वामित्वों को मिटाते हैं

अपना वर्चस्व
बनाये रखने के लिए
पैसे के बल पर
जो हर ऊँचे पद पर
पहुँच जाते हैं
जो हमेशा
एक वर्ग को

शोषित दमित रखना चाहते है
जो बेकार की
बाबू बनाने वाली शिक्षा देते है
जिनके लिए रोजगार
रोजी-रोटी की अनिवार्यता नहीं
महज शौक और दिल बहलाव है ।
बेरोजगारी,
भगवान के घर से नहीं
उनके घर से पैदा होती है ।

देवता समझकर

एक बार
दंगा हुआ शहर में
झगड़ा हो गया
हिन्दू और मुसलमान का
पहले धारा एक सौ चौवालिस लगी
फिर कर्फ्यू लग गया
पुलिस का जोर
अधिक बढ़ गया।

अचानक
झुग्गी-झोपड़ी में
गरीबों की बस्ती में
लग गई आग
आधी रात,
आग बढ़ने लगी
फूस की कच्ची झोपड़ियाँ
माल-असबाब सहित
ऊँची-ऊँची लपटों में
जलने लगीं
कोई चीखते चिल्लाने लगा

कोई रोने लगा
भगदड़ मच गई

लोग जान बचाकर भागने लगे
कोई माँ बिछुड़ गई
कोई बहन कुचल गई
कोई भाई जल गया
किसी का बाप
किसी का बेटा
मर गया
बच्चे सो रहे थे
कुछ हमेशा के लिए सो गये
कोई समझ नहीं पाया
एकाएक यह क्या हुआ ?
कैसे हुआ ?
क्यों हुआ ?

तुरन्त
मुख्य मंत्री का प्लेन
दौड़ा आया राजधानी से,
गृहमंत्री का हेलीकाप्टर
दौरा रद्द कर,
आ पहुँचा स्पाट पर,
मंत्रियों की
नेताओं की
कतार लग गई
अधिकारियों की
घुग्घी बन्द हो गई।

नेताओं ने
कर्णधारों ने
आते ही
गरीबों के जले फफोलों पर
सहानुभूति का टिंचर लगाया
मुख्य मंत्री ने
कुछ सौ कुछ हजार नोट
उनमें तत्काल बाँटा
सभी नेतागण
उन अभागों के साथ
दो-दो आंसू रोये,
उन्हें भोजन दिया
कपड़े दिये
दवाइयाँ बाँटी
आवास-गृहों का आश्वासन देकर
उनके सच्चे हितैषी बन गये
कुछ दिन बाद
पीड़ित जन
दुख-दर्द भूल गये
उनकी राहों में बिछ गये।

अगले सप्ताह
चुनाव होने थे
चुनाव हुये
अहसान मन्दों ने
खिदमतगारों को

वोट देकर
अपना अहसान चुकाया
उन्हें देवता समझकर
जिताया
कुर्सी पर बैठाया।

एक दिन
मोहल्ले के
दो गुण्डों के बीच झगड़ा हुआ
भीड़ एकत्र हो गई
एक ने कहा—

'उस रात
आग इसने लगाया था'
दूसरा बोला—
'आग लगाने का
पांच सौ रुपया
पार्टी वाले से—
इसने लिया था।

●

क्या उत्तर है इसका तेरे पास

रामदास !
तू खेत में हल चलाता है
बैलों के साथ
बैलों जैसे ही श्रम करता है
चिलचिलाती दोपहर में
गर्मी की लू में ।

रामदास !
तू कुदाली लेकर
मिट्टी काटता है
पत्थर तोड़ता है
सुबह से शाम तक
बोझा उठाता है
पसीना बहाता है

रामदास !
तू बर्फीली ठंड में
ठिठुरते हुये
रात-रात भर
खेत में घूमता है
रखवाली करता है फसल की
खांसते हुये
ज्वर में तपते हुये ।

रामदास !
फिर भी क्यों
तू जहाँ का वहीं है ?

क्यों तेरा लड़का नंगा घूमता है
अब भी
स्कूल नहीं जा सकता ?
क्यों तेरी घरवाली
पहनती है फटी साड़ी
अब भी
तन नहीं ढांक सकती अपना ?
क्यों तू रूखा-सूखा
खाये, न खाये
सो जाता है
अब भी ?
बता रामदास
ऐसा क्यों होता है ?

'मेरी तकदीर ही
ऐसी है मालिक,
मेरे हाथ में
ऊपर वाले ने खींच दी है
गरीबी की गहरी-रेखा
शुरू से आखीर तक
भला उसके सामने
क्या चल सकता है, बस मेरा
ऊपर वाले की जैसी मर्जी
सब उसी के हाथ है मालिक
सब उसी के किये होता है !'

रामदास !
तू बहुत भोला है

सचमुच बहुत भोला
रामदास !
यही तो तेरी गरीबी की
शुरूआत है ।
तेरी दूरावस्था की जड़ है
रामदास !
तू नहीं समझेगा
क्योंकि

उन्होंने तेरे दिमाग में
भर दिया है
किस्मत, तकदीर और
मचग्य का भूत
खिला दी है पीस कर तुझे
धर्म की अफीम
नकली भगवान पैदा कर
वे तुझे डराते हैं,
साधू-सन्तों, मुल्लाओं-बाबाओं द्वारा
तुझे दवाये रखते हैं
ताकि
तू ऊपर न उठ सके
हमेशा तेरी पीठ
उनके सिंहासन को
ढोने के काम आये ।
रामदास !
तूने कभी सोचा है

पाप पुण्य
स्वर्ग-नरक
धर्म-अधर्म का अस्तित्व
भगवान का अस्तित्व
यदि सचमुच है—

तो क्यों नहीं सजा मिली
घूसखोरों, जमाखोरों
काला-बाजारियों
और टैक्स चोरों को ?

कैसे
व्याज खाने वालों
खून चूसने वालों
वेईमानों, भ्रष्टाचारियों के
आलीशान महल खड़े हो जाते हैं
देखते ही देखते
तेरी झोपड़ी से ऊँचे ?
क्यों वे लोग
ऐश करते हैं

बिना मेहनत किये ही
और श्रम करने के बाद भी
तू आधा-पेट खाये
सो रहता है ?
बोल रामदास !
क्या उत्तर है इसका
तेरे पास ?

शिकार

तुम्हारी मानवता
दया और सहिष्णुता
उस बिल्ली का पाखण्ड है
जो सौ-सौ चूहे
मारकर खा चुकने के बाद
हज के लिए जाती है।

भिखारी को
चार पैसे दान कर
तुम
समझते हो
स्वर्ग पा लिया है
पाप धो लिया है

सच है—
इसी लालसा में तुमने
भिखारी भी बनाया है
खूब है तुम्हारा
स्वर्ग, तुम्हारा नरक
कि
जिन्दगी-भर
चोरी-ठगी

शोषण, लूट-खसोट
धोखा-धड़ी
करने पर भी
व्यक्ति नरक नहीं जा सकता
(तुम्हारी फिलासफी के अनुसार)
यदि कुछ दाने और पैसे
भूखे-नंगों के लिए
फेंक देता है
तुम्हारी भाषा में
दान कर देता है।
और ऐसा
सिर्फ
तुम्हीं कर सकते हो
मैं जानता हूँ यह भी।

पत्थर के देवी-देवता
स्वर्ग-नरक का झूठ
और भाग्य का फरेब रच कर
बेशक
लक्ष्मी-पुत्र !
आज तुम मौज कर रहे हो
राज कर रहे हो।
किन्तु, कच्चे छप्पर के नीचे

टूटी खाट पर पड़ा
वह भूखा किसान-मजदूर
धर्म, भाग्य,
स्वर्ग-नरक की चक्की में

पिसता हुआ
तुम्हारी साजिश का
शिकार बनता हुआ
देख रहा है चुपचाप
तुम्हारी तरफ
निर्निमेष

लाल लाल आँखों से।
उसकी मुट्ठी अब
कसने लगी है।

एक छलवा

"जीवन क्षण-भंगुर है
जगत माया, मिथ्या है
साथ कुछ भी नहीं जाता
धन का लोभ मत करो"
जो है,
या नही है
उसी में गुजारा करो
अधिक की चाह मत करो
मन को सन्तोष करो।

जो निर्धन हैं
नंगे, भूखे, जर्जर है
उनके सन्तोष के लिए
उनकी महत्वाकांक्षा-कुचलने,
दबाने के लिए
यह पाठ
उस लोमड़ी की समझ की तरह है
जो अंगूर को न पा सकने पर
मन को समझा लेती है,
कि अंगूर खट्टे हैं।

जो धनी हैं,
कुबेर, लक्ष्मी-पुत्र हैं
साहूकार, जमीनदार
व्यापारी, उद्योगपति
कालाबाजारी
कोठी, बंगले, कार वाले हैं

जो रात-दिन
धन बटोरते हैं दोनों हाथों से
दूसरों का हक छीनते हैं
तिजोरियां भरते हैं
धन ओढ़ते, धन बिछाते
धन सोते, धन जागते
धन ही जीते, धन ही मरते
धन की हर सांस लेते हैं
वे भी (ताज्जुब है)
धर्म का राग अलापते हैं—

साथ कुछ भी नहीं जाता
धन का लोभ मत करो
जो उपलब्ध है
या नहीं है
उसी में सन्तोष करो।

धर्म के नाम पर
एक छलता है
दूसरा छला जाता है
धर्म के नाम पर

एक लूटता है
दूसरा लुट जाता है
धर्म
अफीम है, मीठा नशा है
एक खाता है, दूसरा खिलाता है
धर्म
एक अस्त्र है,
एक मारता है, दूसरा मर जाता है।

किन्तु अफसोस है

कौन कहता है
शेर मर गया है
खरगोश द्वारा चतुराई से
शेर को कुएँ मे गिरा कर
मार डालने की कहानी
सिर्फ कहानी है
कहानी सच नहीं होती ।

शेर,
जंगल का राजा
इतना नादान नहीं है
एक पिद्दी खरगोश की चाल में आकर
कुएँ में कूद पड़ेगा,
मर जाएगा ।
सच तो यह है
शेर आज भी जिन्दा है
और जंगल के
मासूम-निरीह जानवरों को
कुशलता से
एक-एक कर

मार रहा है,
खा रहा है,
आज भी।
जंगल के जानवर
नादान हैं
वे विभाजित हैं गुटों में
बंटे हुए हैं सदियों से
जाति के नाम पर
बोलियों के नाम पर
अपनी सींग और पूछों के नाम पर
आपस में लड़ते हैं
दंगा करते है
खून बहाते हैं।

शेर,
इसी व्यवस्था को जारी रखते हुए
उन्हें फोड़ते और
विभाजित करते हुए
राज कर रहा है उन पर
एक छत्र, तानाशाह
एक-एक कर
उन्हें चट कर रहा है

मोटे से
और मोटा बन रहा है
बनता जा रहा है।

जंगल का शासन
चालू है इसी तरह
शेर धोखे से नहीं मारा जा सकता
शक्ति को
शक्ति ही पराजित करती है
शक्ति का स्रोत
एकता में है
किन्तु,
अफसोस है
जंगल के जानवार
एकता का अर्थ
नहीं समझते ।

भालू-बालक

एक दिन
एक बालक को
एक भालू
उठा ले गया,

सात-आठ वर्षों तक
भालुओं ने बालक को
पाला-पोसा
खिलाया-पिलाया
बड़ा किया।

एक दिन अचानक
वह बालक भाग निकला
मनुष्यों की बस्ती में आ पहुँचा।

लोगों ने देखा
एक बालक भालुओं जैसी
हरकतें करता है

कच्ची मछलियाँ खा जाता है
मुर्गे-मुर्गियों को
ललचाई नजरों से देखता है
दर्शकों के कपड़े फाड़ता है
मुँह नोचता है
डाक्टरों का कहना है

अब उस भालू-बालक की
फिर से इंसान बनने की सम्भावनायें
बहुत कम है,
नही है ।

हमारी भूमि पर भी
कभी भालू राज करते थे
अब वे चले गये हैं
अपनी गुफाओं में
हमें आजाद करके ।

किन्तु कई बालकों को
वे अपने साथ रखकर
ट्रेंड कर गये हैं
अपने संस्कार उन्हें सौंप गये हैं ।

अब वे भालू-बालक
ठीक उन जैसी
भालूई हरकतें करते हैं
निरीह मछलियों को
कच्ची खा जाते हैं

निर्दोश-निहत्थे जीवों को
ललचाई नजरों से देखते हैं
भोले-भाले लोगों को
नोचते काटते, खसोटते
उनका खून पीते हैं
इन छत्तीस वर्षों में
वे बड़े हो गये हैं
भालू से भी अधिक
खूंखार बन गए हैं ।

अफसोस यह है
वे पहचाने तो जाते थे

ये पहचाने भी नहीं जाते।
वही रूप वही स्वरूप
वही आकार
वही प्रकार
सिर्फ हरकतें अलग हैं
इरादे दूसरे हैं
इंसान द्वारा इंसान को
मिटाने के नापाक इरादे।

एक बूढ़ा था
उसने आशा दिलाई थी
भालू-बालक एक दिन—
सुधर जायेंगे
अपनी हरकतों से बाज आयेंगे।
जनता इन छत्तीस वर्षों में

परख चुकी है
डाक्टरों का कहना ही सच है
भालू-बालकों के
फिर से इंसान बनने की सम्भावनायें
बहुत कम हैं
नहीं है।

अब वह उठेगी....

सदियों से
शोषित और पीड़ित बुढ़िया
देख रही है
तुम्हारे सुनहरे-नुकीले
हाथों को
समझ रही है
तुम्हारे इरादों को।

तुम्हारा झूठ
अब बहुत दिनों तक
नहीं चल सकता।
कातिल का सुराग
मिल चुका है।

तुम्हारे रचे हुए
पंडित और मुल्ला
धर्म के ठेकेदार
पाखण्डी हैं
तुम्हारे पैदा किये हुए
देवी-देवता
अंधे और बहरे हैं

अब बुढ़िया ने
अपंगों पर विश्वास करना
छोड़ दिया है
बुढ़िया सब जान गई है
बुढ़िया अब जाग गई है।

तुम्हारे नेता
तुम्हारे मंत्री
तुम्हारी काली कमाई के बल पर
(बुढ़िया को ठगकर)
आज कुर्सी पर बैठे है
या कि बैठने को बेचैन हैं

उनके मुखौटे
प्याज के छिलकों की तरह
एक-एक कर
उघड़ गए है।
वे नंगे हो गये हैं पूरी तरह
अब तुम्हारा कोई
कीमती से कीमती सूट भी
उनके नंगे बदन को
नहीं ढाँक सकता।

शिलान्यास, उद्‌घाटन
भाषण, आश्वासन
आरोप-प्रत्यारोप का
मदारी-खेल

तुम्हारे वन्दर
बहुत कर चुके।
सदियों से
जुल्म और अन्याय सहती
बुढ़िया,
अब न्याय पाने के लिए
तुम्हारे न्याय-घरों में
नही जाएगी।
तुम्हारे न्याय के सामने
वह अब नहीं गिड़गिड़ाएगी।

बुढ़िया
जान चुकी है
इंसाफ माँगने से
नहीं मिलता,
अब वह उठेगी
इंसाफ खुद करेगी।

ईश्वर ! तुम्हें झुठला रहे हैं लोग

ईश्वर !
ईश्वर ! तुम्हें झुठला रहे हैं लोग,
कुछ मोटे-मोटे लोग।

वे मंदिर बनाते हैं तुम्हारे नाम का
कहते है ईश्वर सिर्फ मंदिर में है
चमकाते है उसे संगमरमर से
सोने की परतों से
रोशनी की झालरों से
सुनाते हैं वहाँ राम और कृष्ण के भजन
टेप-रिकार्ड व लाउड स्पीकरों में
और वे लोग
गुप्त-पेटियों में भरते हैं गुप्त धन।

ईश्वर ! तुम्हारे नाम पर
मनुष्य के विश्वास को
भुना रहे हैं लोग
कुछ मोटे-मोटे लोग।

वे प्रार्थना में तुमसे
गुनाहों का लाइसेंस माँगते हैं,
जिन्हें तुमने पैदा किया है
उनको चूसने हेतु
तुम्हीं से परमिट माँगते हैं—

साधिकार।
और वदले में देते हैं तुम्हें रिश्वत
मोटी-मोटी पोटलियों में—
वेनाम

अपने चारागाह स्थाई करने के लिए।
ईश्वर! तुम वास्तव में हो या नहीं,
मैं नहीं जानता
लेकिन, जिसने भी तुम्हें पहले
पत्थर से भगवान बनाया होगा
तुम्हारे स्वरूप को
उतारा होगा जगत में
मैं समझता हूँ
मनुष्य को मनुष्य बनाने के लिए ही।

किन्तु, आज कुछ लोग
तुम्हें भगवान से फिर पत्थर बनाने पर
मनुष्यता को मिटाने पर तुले हैं,
इसलिए रच रहे हैं नित नये मंदिर
पनपा रहे हैं नित नये भरम
मिटा रहे हैं नित –
तुम्हारा विश्वास।

तुम्हारा ही नाम ले लेकर
ईश्वर! तुम्हें झुठला रहे हैं लोग
कुछ मोटे-मोटे लोग।
कुछ खोटे से लोग।

मैं कंगूरा हूँ

मैं ! एक मालदार अफसर के
तिमंजिले ! आलीशान मकान का
चमकता कंगूरा हूँ।

मैं कितना ऊपर हूँ
सूर्य की किरण
सबसे पहले मेरा स्वागत करती है

हवा सबसे पहले
मेरा स्पर्श करती है
मैं आसमान से
नजरें मिला सकता हूँ

आसपास के सभी घर
सभी छतें
मेरे से नीचे हैं
मुझसे छोटे हैं
मैं उन सबमें विशिष्ट हूँ
मैं वी० आई० पी० हूँ।

सबकी नजरें मेरी तरफ
टिकी रहती हैं

मुझमें कितना रोब है
कितना रुतबा है
कितनी शान है
मेरी चर्चा हर गली में होती है
मैं चमकदार हूँ
मैं हैसियतदार हूँ।
यह बात दूसरी है कि
मेरी नींव में
जो ईंटे लगी हुई हैं

वे रिश्वत के नोटों से खरीदी गई थी
मेरी दीवारों में जो सीमेन्ट है
वह एक ठेकेदार द्वारा
भेंट में दी गई थी

मेरी छतों में जो लोहा है
वह एक व्यापारी से
उसके दो नंबर के खातों के
बदले मिला था

मेरे दरवाजों में जो लकड़ी है
उसे रेंजर ने। साहब को खुश करने के लिए
भिजवाया था

लेकिन
इससे क्या
ये सब तो पोत दिये गये है
सफेदी से, वार्निश से

रंग-रंग के डिस्टेम्पर से
भला इसे कौन देखता है अब
मैं तो बस
एक मालदार अफसर के
तिमंजिले ! आलीशान मकान का

चमकता कंगूरा हूँ
मैं सिर पर हूँ
मैं विशिष्ट हूँ
मैं वी० आई० पी० हूँ
मैं कंगूरा हूँ।

सत्यवादी

राजा हरिश्चन्द्र
सत्यवादी थे
बतलाते हैं
हमारे धर्मग्रन्थ
राजा ने स्वप्न की बात को भी
झूठ नहीं बोला
राजा का राज-पाठ छिन गया
राजा की धन दौलत लुट गई
राजा मरघट में चौकीदार बना
राजा की पत्नी बिक गई
राजा का पुत्र मर गया
राजा का सत्य
फिर भी अटल रहा

अन्त में परीक्षा पूरी हुई।
सफल हुई
देवता प्रसन्न हुए
साक्षात प्रगट हुए
फूल बरसे
मन हरषे

पुत्र जी उठा
पत्नी मिल गई
राज पाठ।
धन-वैभव मिल गये
भाग जग गये।

× × ×

गाँव का भोला-भाला
सीधा-सादा
इतवारी
सत्यवादी है

इतवारी
किसी से झूठ नहीं बोलता
किसी का मन नहीं दुखाता
किसी से बेइमानी नहीं करता
किसी को गाली नहीं बकता

इतवारी
रोज भिनसारे उठता है
बैलों को दाना-पानी देता
रोज खेत में जाता
हल चलाता
मिट्टी खोदता
धान बोता
चलाई करता
रखवाली करता

इतवारी दिन-दिन भर
मेहनत करता है।
अकाल पड़ा
इतवारी का खेत लिखा गया
धान मे कीड़े लग गये
इतवारी के जेवर चले गये
सूखा पड़ गया
इतवारी का बैल मर गया
इस वर्ष पाला पड़ा है
इतवारी की घरवाली बीमार है
साहूकार का कर्ज लदा है
इतवारी का लड़का
कमिया लगा है
घर-खेत वीरान है
इतवारी बेजान है

फिर भी
न देवता प्रगट हुए
न फूल बरसे
न लड़का मुक्त हुआ
न मन हरषा
न घरवाली स्वस्थ हुई
न खेत वापस हुए
न भाग जगे।

उन्हें जरूरत है

उन्हें
जरूरत है ईश्वर की
काले धन को सफेद बनाने के लिए
धर्मात्मा कहलाने के लिए

उन्हें
जरूरत है ईश्वर की
उनके पापों को
जानबूझकर किये गये कुकर्मों को
क्षमा करने के लिए
झूठ से व्याकुल
मन की शान्ति के लिए

उन्हें
जरूरत ईश्वर की
कमंडल, माला और भगुवा भेष धर
बिना मेहनत किये ही
पेट भरने के लिए
हराम की कमाई लूटने के लिए

उन्हें
जरूरत है ईश्वर की
जनता को हमेशा-हमेशा भरमाये रखने के लिए
अपना आसन चिरस्थाई रखने के लिए
उन्हें जरूरत है। ईश्वर की।

इंकलाब का अलख चाहिए

आज दुबारा युवकों को
भगतसिंह आदर्श चाहिए
देश बचाने को फिर से
इंकलाब का अलख चाहिए

दर-दर का भटकाव छोड़कर
फैशन का उन्माद छोड़कर
अन्याय विरुद्ध संघर्ष चाहिए
इंकलाब का अलख चाहिए

बहुत हो चुकी देव याचना
कठपुतली का नाच-नाचना
जीवन का अब उत्कर्ष चाहिए
इंकलाब का अलख चाहिए

बहुत उड़ चुके शून्य गगन में
भ्रमे बहुत मृग-मरीचिका में
आकाश छोड़ अब जीने को
सचमुच की भू-धरा चाहिए

आज दुबारा युवकों को
भगतसिंह आदर्श चाहिए
देश बचाने को फिर से
इंकलाब का अलख चाहिए।

आज में लौट आओ

साथी !
तुम आज में लौट आओ ।
अतीत के
गुजरे हुए पृष्ठों को
दीमक की तरह कुतरने से
कुछ भी हासिल नहीं होना
या भविष्य की
स्वप्निल रंगीनियों में
शून्य आकाश में
ऊंचाई तक उड़ने से भी
तुम्हारे हाथ कुछ नही आयेगा

दोनों ही रास्ते
तुम्हारी मंजिल तक नहीं जाते
कुछ दूर चलने के बाद
खत्म हो जाते हैं वे
तुम्हारी प्यास को
बिना तृप्त किये ही ।

अब बहुत देर हो चुकी है साथियों
न जाने इतने दिनों में

गंगा का कितना पानी
व्यर्थ ही समुद्र में बह गया

देखो।
बहनों की असहाय चीखें
निर्दोषों की हत्याएँ
मनुष्यता का चीत्कार
दलितों की पीड़ा
तुम्हें पुकार रही है
बन्द कमरे में लगे
ताले की
खोई चाबी
तुम्हें सिर्फ
आज की तारीख में ही मिलेगी।

उठो
मशाल लेकर चल पड़ो
अपनी कुल्हाड़ियाँ उठा लो
काले पहाड़ों को
काटे बगैर
सूर्य के दर्शन नहीं होंगे तुम्हें
किसी भी हालत में।

कोई और है ?

क्या कहते हो ?
ऊपर वाला
पासा खेलता है
नीचे दुनिया के लोग
बनते-बिगड़ते हैं।

ऊपर वाला
बड़ा पुरससिया है
कोई काम-धंधा नहीं रहता उसे
इसीलिए तो
टाइम-पास के लिए
पासा खेलता है
अपना दिल बहलाता है।

उसका क्या बिगड़ता है
यदि किसी का घर उजड़ जाए
यदि कोई भूखा मर जाए
यदि किसी की बेटी
नापाक हो जाए।

यह तो
बस खेल है,

क्या सचमुच
ईश्वर इतना खुदगर्ज है ?

अथवा
पासा खेलने वाले
अपना मनोरंजन करने वाले
लोगों को लूटने
उजाड़ने-मिटाने
खून पीने वाले
मंदिर की मूर्तियों के पीछे
छिपकर बैठे
ईश्वर के बहुरुपिये
दरिंदें कोई और है ?

सद्भावना की बोली

'पापा ! पापा !
पैसा दो ना पापा !
हम चाकलेट लेगें
'पिप्पी खरीदेगें'
—कहती है

नन्हीं-सी गुड़िया
अपनी रसीली बोली में
ड्रेस पहने
हाथ में बस्ता उठाये
स्कूल जाने से पहले
रोजाना !

मेरे हाथ
जेब की ओर बढ़ जाते हैं
अपने आप ही
और मैं
गुड़िया की नन्हीं हथेली पर
रख देता हूँ प्यार से
एक गोला सिक्का
रोजाना ।

मैं जानता हूँ
मेरा यह प्यार
यह सद्भावना
यह सरसता

वात्सल्य की निश्छल अभिव्यक्ति
बहुत दूर तक नहीं चलेगी
उस दिन
सूख जाएगी स्नेह की गंगा
जब गुड़िया सयानी होगी

प्रणय की मधुर वेला में
जब कोई दूल्हा
इस सद्भावना की बोली लगाकर
दहेज की माँग करेगा
दुल्हन से ब्याह करेगा।

चेतना

हाथ पर हाथ रखकर
बैठ रहने से कुछ नहीं होगा
भगवान के आसरे
पड़े रहने से कुछ नहीं होगा
किस्मत के भरोसे
सोये रहने से कुछ नहीं होगा।

चमत्कार,
सिर्फ कहानियों में
किताबों में होता है।
लाटरी,
सिर्फ सपनों में
कल्पना में खुलती है।
जादू,
सिर्फ फिल्म के परदे पर
मदारी के खेल में होता है।

जीवन का
वास्तविक रास्ता
कंकरीली, पथरीली
कंटीली
ऊबड़-खाबड़

पगडंडियों से होकर ही गुजरा है
जिसे
व्यवस्था ने रचा है
और इसका कोई दूसरा विकल्प नहीं।

आओ!
हम सपनों में डूबना छोड़कर
हाथ में कुदाली उठाएँ
अपने रास्ते को
निष्कंटक
समतल बनाने के लिए।

हजारों हजार स्वप्न देखने से
बेहतर है
एक बार कुदाली चलाना
पूरी ताकत से
सारे अवरोधों के खिलाफ।

आमूल-मंथन

देश !
मुख्य बात यह है
तुम्हारे शरीर में
गुलामी के कण
अब भी बर करार हैं,
तुम्हारे रक्त में
शोषण के जीवाणु
अब भी जिन्दा हैं,
अब भी
तुम उपनिवेशी संस्कृति के
पुजारी हो
मत्स्य-न्याय के
हामीकारी हो।

कितनी हो
निरीह खुशियों को निगलकर
लायक बनता है एक शासक
और हुकूमत चलाता है
तुम्हारी सर-जमीं पर
अपनी व्यवस्था को

मजबूती के साथ
कायम रखते हुए ।

उसके जाने के बाद
फिर
उसी जैसा कोई दूसरा शासक
कोई भी मुखौटा चढाकर
बनता है उसका
उत्तराधिकारी
और
चलता है उन्हीं पद्-चिन्हों पर ।
बदले,
अगर राजा बदले
पर राजा का
ताज न बदले ।

देश !
महज कपड़े बदल देने से
शरीर के रोग
मिट नही सकते
स्वस्थ शरीर के लिए
जरूरी हैं
आमूल-मंथन
व्यवस्था परिवर्तन ।

आज के संघर्षों से कटे

मेरे शहर के
बगीचे में
इकट्ठे होते है
कुछ बूढ़े लोग
आते हैं रोज

लाठी टेकते-टेकते
कमर झुकाये
आँखों में ऐनक चढाये
धोती और कुर्त्ता पहने,
शेरवानी और पैजामा पहने
मेरे शहर के
कुछ बूढे लोग।

वे
बीती स्मृतियों में
खोये रहते हैं हमेशा
वे अपने जमाने के बगियों की
चर्चा करते है
वे घोड़ो का कद
और गाड़ी की चाल बतलाते हैं
वे मास्टर की मार
और भाटे का भाव बताते हैं
वे सोने-चाँदी की

काजू-किसमिस की शुद्धता की चर्चा करते हैं
वे बताते हैं
कि चार आने में
कितना थैला भर
समान आता था

वे बताते हैं
कि दस रुपये में
कैसे परिवार चलता था
घी तेल दूध कितने सस्ते थे
हमारे जमाने में
वे अपने जमाने की
बीती बातें बतियाते हैं
लाई-चना फांकते हैं
समय काटते है
मेरे शहर के
कुछ बूढे लोग।

आज की चिन्ताओं से दूर
आज के संघर्षों से कटे
सच्चाई से बेखबर
अतीत के पृष्ठों को
दीमक की तरह कुतरते
बैठे-ठाले लोग
मेरे शहर के
बगीचे मे
इकट्ठे होते है
कुछ बूढे लोग

इस सन्देश की आवाज

लाल दीवारों की प्राचीर से
श्रीमती 'क'
राष्ट्र के नाम सन्देश देती है—
'हम सब एक हैं
हमें मिल जुल कर रहना है
हमें एक-दूसरे की मदद करना है'

इस सन्देश की आवाज
उस ठेकेदार तक क्यों नहीं जाती
जो मजदूरी काट लेता है
मजदूर के बीमार होने पर
दवा के पैसे नहीं देता।

इस सन्देश की आवाज
उस साहूकार तक क्यों नहीं जाती
जो किसान का खेत हड़प लेता है
ब्याज ! ब्याज का ब्याज नहीं पटने पर ।

इस सन्देश की आवाज
उस खाखी वर्दी वाले तक क्यों नहीं जाती
जो बंगले वालों से रिश्वत खा कर
किसी निर्दोष को पकड़ कर बंद कर देता है ।

इस सन्देश की आवाज़
उस अफसर तक क्यों नहीं जाती
जो कुछ हरे नोट लेकर
देता है परमिट-मक्कारों को
चीनी, चावल, सीमेंट ब्लेक करने के लिए।

इस सन्देश की आवाज
उन चाकू वालों तक क्यों नहीं जाती
जो किसी मालदार के हाथ बिक कर
खून कर देते हैं किसी भी निर्दोष का।
इस सन्देश की आवाज
क्यों नहीं जाती उन तक .....
क्यों नहीं जाती ?

रोग का कारण ?

भारत
दुबला-पतला कृशकाय
मरियल लड़का
कमजोर और दुर्बल
अशक्त-निर्बल
माता पिता,
भारत के जन्मदाता
भारत के पालनहार
चिन्तित हर वक्त अपने लाड़ले के लिए
व्याकुल हर समय
अपने इकलौते पुत्र की
जीवन-रक्षा हेतु।

भारत
रोज घी-दूध
फल-मेवा खाता है
भारत हर रोज पौष्टिक आहार पाता है
भारत विटामिन और प्रोटीन युक्त
टानिक पीता है
भारत कसरत करता है
भारत ताजी हवा में घूमता है
भारत बलिष्ठ बनने का।
स्वस्थ होने का
हर सम्भव प्रयास करता है

फिर भी
भारत ज्यों का त्यों
दुर्बल और कृशकाय है
क्यों ?
आखिर
सब खाया-पिया
कहाँ जाता है ?

एक दिन
माता-पिता ने
डाक्टर का द्वार खटखटाया
भारत का रोग दिखलाया
डाक्टर ने भारत का निरीक्षण किया
शरीर का परीक्षण किया
बड़े परिश्रम से
डाक्टर ने एक-एक अंग परखा
जांचा और निरखा
अन्ततः
डाक्टर रोग की जड़ तक
रोग की उत्पादकों तक
आ पहुचा

दवा के खाते ही
भारत ने उगल दिया
पेट के दुश्मनों को
शरीर के नाशकों को।
शरीर के बाहर निकाल दिया
माता-पिता ने देखा
चार लम्बे-लम्बे
भयानक केचुए।

मुंह फाड़े
क्षत-विक्षत लहू-लुहान
पेट की आंतों को छोड़
बाहर निकल आये थे
बरबस।

भारत के शोषक
विकास के भक्षक
दो पुराने केंचुए थे
मालगुजार और साहूकार

दो नये केंचुए थे
व्यापारी और उद्योगपति
इन्हीं की जानिब थी
भारत की दुर्गति।

निश्चित तौर पर

मैं नहीं जानता,
ईश्वर का अस्तित्व
इस दुनिया में है—
या नहीं ?

जो आस्तिक हैं
मानते हैं कि ईश्वर है
वे लोग
ईश्वर को अभी तक
नहीं खोज पाये।

जिन्हें
यह विश्वास है
कि ईश्वर का अस्तित्व
इस जगत में नहीं है
उनके पास भी
अपने कथन को पुष्ट करने के लिए
पर्याप्त प्रमाण नहीं हैं।

फिर
मैं कैसे कह दूं
ईश्वर है, या नही।
मैं सिर्फ इतना जानता हूँ,
यदि ईश्वर है भी
तो वह
किसी धन्नासेठ के द्वारा
बनाये गये आलीशान मंदिर मे
कतई नही है।
वह साहूकार या मालगुजार की तिजोरी में/अथवा

किसी जमाखोर
टैक्स चोर
काला बाजारिए की कोठी के
पूजा-घर में भी नहीं है ।

वह नहीं है
उन भ्रष्टाचारियों के घरों में भी
या उनके चन्दे से बनाये गये
बेजा कब्जे के
मंदिर में भी
जो दिन भर
घूस के पैसों से
भरते हैं अपना पाकेट
और
थोड़ी सी घूस
दान के रूप में
भगवान को चढ़ा देते हैं/अथवा

व्रत-उपवास रखकर सपरिवार
उसे रिझाने का
ढोंग करते है ।
मैं नहीं जानता
ईश्वर कहाँ पर है
लेकिन वहाँ तो है ही नहीं
निश्चित तौर पर
जहाँ वे लोग
व्यर्थ में घण्टे बजाया करते हैं
आरती उतारते हैं
चीखते-चिल्लाते हैं

दूसरों को छल कर
अपने को शरीफ बनाये रखने का
नाटक करते हैं ।

नेता/अभिनेता

नेता—
वे अखबारों की सुर्खियों में
रहना चाहते हैं

आये दिन सरकस करते हैं
उछलते-कूदते हैं
आरोप-प्रत्यारोप करते हैं
झगड़ा-लड़ाई
हाथापाई करते हैं
स्केन्डल रचते हैं
अपनी चाल दिखलाते हुए, पदयात्रा करते हैं।

शिलान्यास, उद्‌घाटन करते
भाषण, आश्वासन देते
प्रेस-कांफ्रेंस बुलवाते
सवाल-जवाब करते
फोटो खिंचवाते
नाम छपवाते

अभिनेता—
वे सितारे बनना चाहते हैं
आकाश में
चमकना चाहते हैं
वे अभिनेता हैं
चिन्तित हैं वे भी
जनता में जिन्दा रहने के लिए
क्योंकि,
गुजरे अभिनेता की फिल्म
पिट जाती है।

इसलिए
वे पत्र-पत्रिकाओं में
अपने को बनाये रखते हैं
झूठे किस्से गढ़ते
प्रेम-मुहब्बत के अफसाने रचते
खंडन और मंडन करते
अर्द्धनग्न तस्वीरें छपवाते
उद्घाटन के/मुहूर्त के
पार्टियों में फोटो खिचवाते

सिगरेट, साबुन, ह्विस्की
सूटिंग, शर्टिंग के
विज्ञापनों में आते
पर्दे पर
पर्दे के बाहर भी
अभिनय करते हैं
नाटक करते हैं
आज
नेता और अभिनेता में
क्या फर्क है ?

कुछ नहीं,
सिवाय इसके
एक की फिल्म
तीन घण्टे में खत्म हो जाती है
दूसरे की
पूरे पाँच वर्ष चलती है।

डाक्टर/वकील

डाक्टर,
मरीज का
पक्का इलाज नहीं करता
मरीज को
पूर्ण स्वस्थ नहीं बनाता।

डाक्टर जानता है
पक्का इलाज करने पर
मरीज
फिर-फिर नहीं आयेगा
बार-बार
हरे नोट नहीं देगा।

डाक्टर
सुई चुभोते समय
मरीज का दर्द नहीं देखता
अपनी जेब देखता है।

× × ×

वकील नहीं जानता
क्या सच है
क्या झूठ है

वकील नहीं जानता
कौन सही है
कौन गलत है

वकील जानता है
अपने मुवक्किल को
जिताना है
नोट कमाना है।

कविता ! तुम अलख जगा दो

कविता !
तुम चुप हो !
बैठी क्यों हो ?
तुम उठो शंख बजा दो
कविता ! तुम अलख जगा दो ।

जो भोले हैं
जो सीधे हैं
जो सोये हैं सदियों से
उनकी नींद उड़ा दो
उनको सच बतला दो
उनमें शक्ति ला दो

कविता ! तुम अलख जगा दो ।
तुम ! जाओ अधनू के खेतों में
जाओ होरी के खलिहानों में
जाओ हरिया की बस्ती में
जाओ घर-द्वार-गृहस्थी में

जाओ दुकान में रमुआ की
हटरी में जाओ धनुवा की
तुम खोज-खोज कर
एक-एक के दिल दहला दो
कविता ! तुम अलख जगा दो ।

जो ऊपर है
जो सिर पर है
जिनने कुरूप किया तुमको
तुमको लूटा
तुमको भोगा
जिनने बदनाम किया तुमको

तुम अप्सरा नहीं हो
रणचण्डी हो
आज उन्हें बतला दो
कविता ! तुम अलख जगा दो।